R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

रेणुका पटेल विशेषांक

वर्ष 25 | अंक 49 | रविवार, इलाहाबाद, 26 अप्रैल 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

इस बार रेणुका पटेल

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

जीवन का संसार है कविता,
जीवन की पतवार है कविता।
कविता से जीवन सुख मिलता,
जीवन का आधार है कविता।

तो बात हो रही है भिलाई की रेणुका पटेल की। सरस, सुंदर और सहज स्वभाव की धनी रेणुका पटेल की कविताओं में सरस भावों का अवगुंठन है। जीवन के तमाम उतार-चढ़ाव का अनुभव करती हुई कवयित्री रेणुका पटेल ने कई सार्थक कविताओं की रचना की है। मृदभाषी कवयित्री रेणुका पटेल का अपने माँ के प्रति विशेष अनुराग रहा है। पिता की लाडली पुत्री होने के कारण उन्हें अपने पिता का विशेष स्नेह मिला। उनकी कविताओं की कुछ बानगी देखिए -

पहली बानगी

“
मां ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है
और है सृष्टि की आधार।
इस संसार में निस्वार्थ कुछ है
तो तो वह है बस मां का प्यार।

दूसरी बानगी

“
उत्सव है होली का धूम मची है बरसाने में।
छाया है आनंद उमंग।
रंग रसिया श्याम सांवरिया आये।
ग्वाल बाल के संग।

तीसरी बानगी

“
श्रद्धा के पुष्प समर्पित कर
करूं गुरू चरणों में प्रणाम।
ईश्वर से भी पहले हम
लेते हैं गुरू का नाम।

मार्च माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है। अंक कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरूर दीजिएगा ।

अंत में -

सरस भाव की सुंदर कविता,
जैसे लगती बहती सविता ।
प्रेम,दुलार,पुचकार है कविता,
कविता से जीवन है सजता ।

उमेश श्रीवास्तव

❖ जीवन संघर्ष

मेरा आत्म संघर्ष

रेणुका पटेल
कवयित्री

मेरा नाम श्रीमती रेणुका पटेल है और मैं एक कुशल गृहणी हूं। मै एकांतप्रिय आध्यात्मिक महिला हूँ।
मेरा जन्म 5 -3 -1977 में एक मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में ग्राम बिरकोल में (जिल महासमुंद)हुआ। मेरे पूज्य पिताजी का नाम स्वर्गीय श्री थबीर मोहन पटेल और माता का नाम श्रीमती भोज कुमारी पटेल हैं। मेरे पिताजी खेती-बाड़ी का काम करते थे जो सीधे और सरल स्वभाव के थे।
मेरी माता एक कुशल गृहणी और धार्मिक महिला है। हम लोग चार भाई बहन हैं बड़े भैया दीदी छोटा भाई और मैं मैं अपने माता-पिता की तीसरी संतान हूं। मेरी प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल में हुई। मां बताती है मैं बचपन में चुलबुली और चंचल स्वभाव की थी। गांव में ऊपर की तरफ तालाब नीचे की ओर नदी गांव के मध्य भाग में मेरे दादाजी के द्वारा बनवाया मंदिर है।
हम लोग रोज सुबह तालाब जाते थे नहाने के लिए तालाब घर से थोड़ा दूर था। गाय चराने जाते ग्वाल आते जाते पनिहारन तालाब में बगुला हंस बत्तख और सास ननंद अड़ोसी पड़ोसी की चर्चा करते स्नान करती हुई महिलाएं होती। तालाब में खूब कमल खिलता था और किनारे किनारे कनेर के और बरगद और पीपल के वृक्ष लगे हुए हैं और पास में ही शिवाल य है जहां हम स्नान के पश्चात रोज जल चढ़ाने जाया करते थे। सुबह शाम मंदिर में आरती की घंटी बजते ही हम सब बच्चे प्रसाद लेने के लिए दौड़ते छुपा छुपी लंगड़ी फुकड़ी गिल्ली डंडा ये सारे खेल हमलोग के होते गर्मी की दुपहरी में मां और दादी रामायण और सुखसागर पढ़ते हम लोग दादी के कपड़े धोते कभी-कभी मालिश भी कर दिया करते थे ।
बंटवारे में घरेलू सामान ज्यादा कुछ मिला नहीं था जमीन और घर ही मिला था जिसके कारण घर में आर्थिक समस्या थी लेकिन मेरी मां और मेरे पिताजी बहुत मेहनती थी वह हम लोगों की हर ज़रूरतें पूरी करते थे। बचपन से मेरी रुचि गाने में थी स्कूल में जब भी कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता मैं जरूर भाग लेती थी। बचपन में मेरी रुचि खेल कूद में ज्यादा थी घर के काम में मेरा मन नहीं लगता था तो मां ने मुझे पूजा पाठ करने की जिम्मेदारी दी थी।
गांव में आठवीं तक ही स्कूल था उसके बाद हम ल ोग चारों भाई-बहन पढ़ने के लिए शहर सरायपाल ी आ गए थे। हम दोनों बहन लकड़ी से चूल्हा में खाना बनाते और कभी-कभी स्टोव में बनाया करते थे परीक्षा के समय मां आकर हम लोग के साथ रहती वहां भी मैं स्कूल में जो भी सांस्कृतिक कार्यक्रम कविता अंताक्षरी होता उसमें भाग लेती और मुझे कई बार इनाम भी मिला है।
11वीं और 12वीं की पढ़ाई मैंने साइंस लेकर की 1 साल कॉलेज गई परंतु परीक्षा नहीं दिलाई मां और बाबूजी चाहते थे कि मैं आगे पढ़ूं लेकिन मेरा मन कुछ कारण वश पढ़ाई में लगा ही नहीं मैंने पढ़ाई छोड़ दी मेरे गुरुजी थे जिनके पिताजी कल्याण पत्रिका मांगते थे एक दिन में उनके यहां बैठने गई तो सामने टेबल पर पत्रिका रखी थी मैं पढ़ने के लि ए घर ले आई और मुझे बहुत अच्छा लगा और मेरी रुचि आध्यात्मिक पुस्तकों को पढ़ने में होने लगी मैं भगवत गीता के श्लोक कंठस्थ करने का प्रयास करती धीरे-धीरे मेरी चंचलता कम होने लगी और एकांत प्रियता बढ़ने लगी थी। सन 2000 में मेरा विवाह ग्राम हरदी के श्री घनश्याम पटेल के बड़े सुपुत्र श्री उमाशंकर पटेल जी के साथ हो गया। उस समय उमाशंकर जी शिक्षक थे । घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी लगातार अकाल पड़ने के बैंक से कर्ज लेना पड़ा था इस वजह से कुछ साल तक हम लोगों को बहुत ही परेशानी का सामना करना पड़ा पैसा कितना महत्वपूर्ण है यह बात मुझे ससुराल आने के बाद ही समझ आया। उमाशंकर जी बीएससी बीएड और सिविल इंजीनियर में डिप्लोमा किए हुए हैं।
2003 में भिलाई स्टील प्लांट में ऑपरेटर की नौकरी दल्लीराजहरा में लगी।
यह नौकरी के लिए दल्लीराजहरा चले गए।
इनके कहने पर शादी के बाद ही मैंने बी ए की पढ़ाई प्राइवेट की और पास हो गई।
घर का काम और मेहमानों का आना-जाना लगा रहता था इसलिए दिन में तो समय मिलता नहीं था रात में ही जागकर अपनी पढ़ाई पूरी करती इनका सहयोग मुझे पढ़ाने में हमेशा रहा। कभी-कभी सासू मां के ताने सुनने पड़ते थे लेकिन दिल की सासू मां बुरी नहीं थी। यह नौकरी के लिए बाहर चले गए और मैं प्रसूति के लिए भिलाई अपनी बड़ी बहन के पास आ गई।
8 अगस्त 2003 को मैंने सेक्टर 9 भिलाई अस्पताल में बेटे को जन्म दिया। नॉर्मल डिलीवरी नहीं हुई कुछ प्रॉब्लम की वजह से ऑपरेशन करना पड़ा देखभाल के लिए मेरी मां मेरे साथ अस्पताल में रहीं और कुछ दिन तक मेरे साथ ससुराल में रही। मेरे पेट में काफी दर्द रहता था कुछ कर नहीं पाती थी इसलिए मैं मायके चली गई फिर हम लोग मेरा बेटा पुष्कर जब साल भर का हो गया तो दिल्ली राजहरा चले गए। पड़ोसियों से परिचय हुआ वहां का वातावरण बहुत ही अच्छा लगा मुझे। उमाशंकर जी की तीनों
शिप्ट की ड्यूटी रहती मेरा बेटा बहुत ही नटखट और चंचल था।
झाड़ू पोछा कपड़ा बर्तन घर का सारा काम में खुद ही करती थी क्योंकि मुझे दूसरों का काम पसंद नहीं आता था बेटे को घुमाने ले जाती गार्डन में मंदिर ल कर जाती यही सब दिनचर्या चलने लगा फिर पुष्कर स्कूल जाने लगा। हम लोग घर से ज्यादा कुछ समान लेकर गए नहीं थे वहां एक हीटर एक कुकर कढ़ाई और कुछ बर्तन और सोने के लिए एक गद्दा और हम लोग के पहनने के कपड़े इतना ही समान था हम लोग के पास धीरे-धीरे हम लोग नौकरी के पैसे से गृहस्थी का सारा सामान जुटाने लगे पुष्कर को स्कूल भी भेजना चालू किया। संघर्षपूर्ण जीवन तो था कभी लाइट गोल हो जाता तो पड़ोसी बहन भाभी लोग मदद कर दिया करते क्योंकि हमारे पास उस समय गैस की व्यवस्था नहीं थी। वहां का माहौल अच्छा था सब एक दूसरे की मदद करते थे। पुष्कर का मुंडन और विद्या आरंभ संस्कार हम लोग वहां के गायत्री मंदिर में करवाए।
राजहरा जाने के पहले ही मेरे पिताजी का 5.12.2004 को हो गया। मां की दशा भी बड़ी दयनीय थी कम उम्र में इस आकस्मिक निधन से मुझे भी बहुत ज्यादा कष्ट हुआ।
मैं अपने बाबूजी की लाडली बिटिया थी। उनके बिना मुझे मेरी हर खुशी अधूरी सी लगती है ।ज्यादातर मां मेरे पास आकर रहती क्योंकि यहां माहौल उनको अच्छा लगता था।

❖ कवितायें

रेणुका पटेल
कवयित्री

मां

मां ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है
और है सृष्टि की आधार।
इस संसार में निस्वार्थ कुछ है
तो तो वह है बस मां का प्यार।

लक्ष्मी सरस्वती काली मां के रूप हजार ।
गायत्री गंगा गौ माता तो है अमृत की धार।

कैसे भूल जाते हैं हम मां के इतने उपकार।
उसकी ममता और उसका दुलार।

वही मां जब हो जाती है बूढ़ी और बीमार।
तो बच्चे बड़े होकर क्यों करते है
अपमान और तिरस्कार।
गोद में लिए कभी चिड़िया
तो कभी बंदर दिखा
तुमको खिलाती थी पुचकार पुचकार।
वही मां तुमको बोझ लगती है
उठाना नहीं चाहते उसका भार।
जो दिया तुमको उतना ही दे दो
जो किया तुम्हारे लिए उतना ही कर दो
नहीं चाहती कोई हक ना ही अधिकार।
उसे चाहिए बस थोड़ी सी परवाह
और थोड़ा सा प्यार।
मां के बिना सारी खुशियां अधूरी
अधूरा है परिवार।
मां के बिना मायका सूना
मां है दुनियां मेरी
मां ही है संसार।

रेणुका पटेल
भिलाई छत्तीसगढ़

आया बसंत बाहर

आया बसंत देखो लेकर बाहर।
संपूर्ण प्रकृति कर रही है
आनंद का इजहार।

बोरो से (आम्र मंजरी) से आच्छादित है
अमवा की डाली।
अति सुंदर शोभा प्रकृति की
छटा है निराली।
कुहू कुहू बोले कोयलिया
प्रेमियों के हृदय में कर रहा
मधुर भावों का संचार।

लाल लाल पलाश वन में चहुं ओर।
मृदंग की थाप पर नाचे मन का मोर।
पीली पीली सरसों से सुसज्जित
धरती का पीला है श्रृंगार।

कलियों को चूम कर भंवरे गुनगुनाते हैं।
फूलों से लदी लताये झूम झूम जाते हैं।
हल्की हल्की चल रही है बसंती बयार।

गेंदा गुलाब और सेवंती से सजा है बाग।
प्रीतम के प्रति हृदय में जागता अनुराग।
है सुहाना मौसम प्यारा लागे यह संसार।

सावन बीता जाये

सावन बीता जाये।
श्याम नही आये।
धरूं में कैसे धीर।

बिरहा में जले जिया।
पीहु पीहु बोले पपिहा।
अब सही जाये नाही पीर।
धरूं में कैसे धीर।

तुम बीन है सुना सावन
ढूंढ रही हु बन बाग उपवन।
आन मिलो पिया यमुना के तीर।
धरूं मैं कैसे धीर।

धराशन की अभिलाषी मैं चरणों की दासी।
प्रभु जनम जनम से तेरे प्रेम की प्यासी।
बहे निसदीन मेरे नैनों से नीर।
धरूं मैं कैसे धीर।

बनके बादल श्याम प्रेम रस बरसाओ।
भीगी चुनरिया आत्मा भीगे।
कान्हा अब तो आ जाओ।
काट दो कान्हा जग जंजाल की जंजीर।
धरूं मैं कैसे धीर।

लगी है भीड़ भक्तों की

लगी है भीड़ भक्तों की
माता रानी जी के द्वारा।
होती सुबह हो शाम
मैया जी का जय जय कर।
हो जगदंबे मां तेरी जय जय कर
हो अंबे मां तेरी जय जयकार।

सर पर सवार मेरी शेरावाली मां
तू है बड़ी ही शक्तिशाली।
चमके तेरी माथे की बिंदिया
मैया तू ओढ़े चुनरिया लाली।
मनभावन अति सुंदर रूप है तेरा
मां करके बैठी तू सोलह सिंगार।

भक्त तुम्हे है बड़े प्यारे
बड़ी प्यारी हो मैया तुम भक्त जनों की।
सत्य का साथ ही देती हमेशा
रक्षा करती तू मैया संत जनों की।
महाकाली का रूप धरकर
मां करती तू दुष्टों का संहार।

तेरे चरण कमल में मैया
जो नित्य ध्यान लगावे।
जपे तेरे ही नाम की माला
और तेरा ही गुण गावे।
दुखड़े मिटा के कष्ट हटा के
सुख संपत्ति तू देके मैया
बरसाती है अपनी करुणा ममता दुलार।

देव दनुज मुनि नाग मनुज सब
तुम्हें नित शीश नवावें।
तेरे अमित अद्भुत प्रभाव को
वेद भी पार नहीं पावे।
सब कुछ संभव है कृपा से तुम्हारी
मैया महिमा तुम्हारी है अपरंपार।
जय माता दी

मैया तेरा दरशन।

मंगलमय और सुखदाई है मैया तेरा दरशन।
तुमसे मेरा नाता जन्मों का है प्यारा ये बंधन।

तुम्हीं मेरा सहारा मैया हर दम तुम्हे पुकारूं।
आंचल की छाया में बैठ मैया तुम्हें निहारूं।
मैं हूं तेरे भरोसे मैया तूने ही दिया ये जीवन

काम क्रोध लोभ मोह राग द्वेष में उलझे है
बड़ी मोहानी है तेरी माया।
दुःख की ज्वाला में जलते मन को
मिली है तेरी भक्ति की शीतल छाया।
जीवन का घोर अंधकार मिटाये
तेरी भक्ति की लगन।

तेरी भक्ति तेरी आराधना है जीवन का सार।
मुझको गले लगा लो मैया आ जाओ एक बार
तेरा प्यार पाने को मैया व्याकुल है ये मन।।

जय माता दी
आनंद उमंग लिए आज आई मेरी स्कंदमाता।
ममतमायी मैंया मेरी तुम संग है निर्मल नाता।
दमके गौर वर्ण रूप तुम्हारा।
भक्तों को लगता है बड़ा प्यारा।
जीवन संवार दो मैया बनके भाग्य विधाता।

अपनी ममता की शीतल छाया में
मां हमको बिठाए रखना।
तेरी भक्ति तेरी पूजा मां तेरा दर्शन
है मेरे जीवन का सपना।
तुम्ही हो आसरा मेरा मैया
तुम्ही हो जीवन दाता।

सुंदर सिंगार करू आज मैं तुम्हारा
फूलो से तुमको सजाऊं।
गुड़हल गुलाब और फूल कमल के चढ़ाऊं।
लाल माहवार लाल मेंहदी
और लाल चुनरी ओढ़ाऊ।
तन मन से जो करे तेरी सेवा
वो मनवांछित फल पता।
बोलो स्कंद माता की जय।
दूर हो जाए रोग शोक
और चिंता भय
जय माता दी

होली

श्याम पिया के संग मैं तो होली खेलूं आज
प्रेम का रंग चढ़ गया ऐसे
भूली मैं तो लोकलाज।

आनंद बरसे बरसाने में बस उठी कृष्ण की बांसुरी।
हमको हृदय लगा लो प्रीतम सही न जाए यह दूरी।
माखन चोर तुम मन भी चुराते हो तुम हो चोरों के
सरताज।

केसर कस्तूरी और भर लाई मैं तो गुलाल।
कभी न छूटे रंग ऐसे रंग दो चुनरिया मोरी नंदलाल।
फूलों के श्रृंगार से मन महके सजाऊं आपके लिए
फूलों का साज।

रंगीले रसिया तुमको सुनाऊं मधुर गीत।
कहो कैसे तुमको मैं रिझाऊं मेरे मनमीत।
हृदय हरि तुम पर वारी हे कुंवर ब्रजराज।

सांवरिया रहना सदा मेरे संग।
थिरक थिरक नाचूं आज
भीगा मोरा अंग अंग।
ब्रज में महोत्सव होली का
मानए सकल समाज।

होली

मस्त महीना फागुन आया होली का त्यौहार।
पिचकारी और रंगों से सजा हुआ है बाजार।

झूम रहे सब मस्ती में बच्चे बूढ़े जवान।
गुजिया बर्फी बड़े घरों में बने हैं पकवान।
नीला पीला हरा गुलाबी रंगों की बौछार।

गोरे-गोरे गालों पर लगा दो रंग गुलाबी
हंसी ठिठोली करती मेरी पड़ोसन भाभी।
बच्चे भर भर पिचकारी करते रंगों की रसधार।

परम भक्त प्रहलाद को जला न सकी
धधकती अग्नि की ज्वाला।
प्रभु ने पग पग पर अपने भक्त को संभाला।
भक्ति के विश्वास की रक्षा के लिए
धरे नरसिंह अवतार
भक्ति और विश्वास की लौ जलता रहे
बुराई पर अच्छाई की होती है जीत
सकारात्मक सोच हो अपनी
करो सबका मंगल सबका हीत।
मिटे ईर्ष्या अहंकार सद्भावों का हो संचार

नकारात्मकता को भस्म कर
सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर
विश्वास और भक्ति की लौ जलता

नारी शक्ति

शक्ति का स्वरूप है नारी।
मां बहन बेटी और पत्नी के रूप में
छवि अति सुंदर लगती प्यारी।
आत्म बल से ओत प्रोत
मत कहना अब उसे बेचारी।
बखूबी निभाती है वह
घर और बाहर की जिम्मेदारी।
दुःख सहकर भारी से भरी।
जो कभी हिम्मत ना हारी।
नारी सृष्टि का श्रृंगार है।
नारी जीवन का आधार है।
नजरिया बदला है बदला विचार है।
चरणों की दासी नहीं वह तो गले का हार है।
नारी के बिना अधूरा घर परिवार है।
नारी से ही सुंदर-सुखी यह संसार है।
वीर पद्मिनी झांसी की महारानी है।
वह भक्ति मति मीरा
श्री कृष्ण की प्रेम दीवानी है।
जन्म दिया जीजाबाई ने
छत्रपति शिवाजी जैसे वीर संतान।
कौन नहीं जानता महान विदुषी
वेदों की ज्ञाता ब्रह्मवादिनी गार्गी का ज्ञान।
नारी की महिमा गाते वेद पुराण।
देवता निवास करते वहां
जहां होता है नारी का सम्मान।
त्याग तपस्या स्नेह
और ममता है जिसकी पहचान।
असह्य पीड़ा सहकार भी
मां बनना अपना सौभाग्य मानती है।
इसलिए नारी का (मां का)
जगत में सर्वोपरि है स्थान।
सती सावित्री यमराज से
छीन लाई पति के प्राण।
तकदीर बदल डाली अपनी
बदल दिया विधि का विधान।
नारी नहीं है सिर्फ भोग की वस्तु
और सजावट का सामान।
निश्चित ही सर्वनाश हुआ उसका
जब जब हुआ नारी का अपमान।
लेकिन कभी कहीं कही नारी का
विकृत रूप आता है नजर।
क्यों गलत कदम उठाती है
वह इतनी निष्ठुर और निर्दय होकर।
नारी की आजादी का अर्थ क्या है?
क्या अंग प्रदर्शन
और छोटे कपड़े पहनना।
आजादी तो चाहते हैं हम
अपने भावों और विचारों
को व्यक्त करने की
अपने सपनों को पूरा करने की
लेकिन सदैव यह स्मरण रखना
लज्जा ही है नारी का गहना।
और सदा हमको अपनी मर्यादा में ही रहना।
अब न आंसुओं में है बहना।
अत्याचार अन्याय अब और नहीं है सहना।

बरसाने की

उत्सव है होली का धूम मची है बरसाने में।
छाया है आनंद उमंग।
रंग रसिया श्याम सांवरिया आये।
ग्वाल बाल के संग।
नटखट है नंदलाल हमारी राधा है भोरी।
बहियाँ पकड़ कलियां मरोड़े
कान्हा काहे करे बरजोरी।
भोली भाली हम ब्रज की गुजरिया
कान्हा न छेड़ो हमे ना करो तंग।
ललिता विशाखा चंद्रावली सखियां
देत मीठी मीठी गारी।
सुन सुन हर्षित ग्वाल बाल सब
श्याम के हांथ कनक पिचकारी।
भर भर कान्हा भिगोये राधे चुनरिया
सखियान के अंग अंग।
कृष्ण प्रेम का पीकर प्याला
सारी सखियां हुई मतवाली।
सुध बुध खोई प्रेम मगन सब
आज बीरज की नारी।
नीला पीला हरा गुलाबी
सब पर चढ़ गया श्याम रंग।
तन मन मेरा भी रंग गया श्याम रंग।
कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी तिथि
आया करवाचौथ का त्योहार।
आओ सुहागन बहनों
आज करले सोलह श्रृंगार।
सुहागन पति की लम्बी आयु के लिए
गणपति चंद्रमा और शिव पार्वती
का करती पूजन।
पति पत्नी के प्रेम का प्रतीक
सुंदर भावों से भरा
जहां है त्याग तपस्या और समर्पण।
मिले पिया से प्रेम और विश्वास का उपहार।
दिनभर निर्जल निराहार रहकर
करती कामना सुख समृद्धि
और पति के कल्याण की
यही वरदान मांगती सदा
प्रभु रक्षा करना पिया के प्राण की
इस व्रत उपवास से मिले
हमको सुंदर सुखी संसार
सावित्री सीता जैसे सातियों की
ये धरती है अति पावन
विवाह जहा सुंदर संस्कार
और है ये पवित्र बंधन।
दिल बस चाहे यही
रहे सलामत सजना मेरा
और सजना का प्यार।

ज्ञान का दीप जले

ज्ञान का दीप जले मिट जाय अंधकार ।
बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक।
दीपावली आनंद उल्लास का पवन त्यौहार

बनते स्वादिष्ट व्यंजन मिठाई और पकवान
सजे सुंदर फुलझड़ी पटाखे
और दीयों की दुकान।
रंगोली से सजे हैं आंगन
और सजे हैं वंदनवार।
विद्या बुद्धि के दाता गणपति
और सुख समृद्धि धन वैभव की
देवी महालक्ष्मी की करते आराधना।
उम्मीद और आशा की दीप जले सदा
जीवन हो इक साधना।
काम क्रोध लोभ मोह
ईर्ष्या द्वेष मिट जाय मन के सारे विकार।
गणपति संग पधारो मां महालक्ष्मी
सद्गुणों से भर दो भंडार।
राज्याभिषेक होना था राम जी का
लेकिन मिला वनवास।
जीवन की प्रतिकूलताओं से
बाधाओं से हम भी ना हों निराश।
ऐ मन प्रभु राम के गुणों को धारण कर

रेणुका पटेल

अपने भीतर के अवगुण अहंकार
रूपी रावण को मार।
सदा सत्य की होती जीत
असत्य की होती है हार

शुभ दीपावली

अपने सारे गम छुपाकर सिख गया
मुश्किल में भी मुस्कुराना।
जीवन के हर पल को
गीत और गजल बनाकर गुनगुनाना।

अपने सपनों को करने के लिए साकार।
प्रयास हमें करते रहना है बार बार।
जीवन की विषमताओं से
आलोचना से निंदा से हमें नहीं घबराना।

चार दिवारी में अब कैद नहीं है हम।
अपनी उपलब्धियां प्राप्त करने को
अपनी मंजिल की ओर बढ़ चले हैं कदम।
अब नहीं सोचना क्या कहेंगे लोग
और क्या कहेगा जमाना।
विचार जो हमने अपने बदले
तो बदल दिया जमाना।
हमें निर्धारित करना है लक्ष्य हमारा क्या है
जगाना अपने भीतर आत्मविश्वास दिया है।
मुश्किलें तो आयेंगी मगर
अपनी लगन में होकर मगन
हमें तो बस बढ़ते ही जाना।

हर क्षेत्र में नारी आज
अपना देती है योगदान।
राष्ट्रपति पद पर बैठ बढ़ाए देश की शान।
बेबाश और बेचारी नही अब
भारती हैं ऊंची उड़ान।
साहित्यकार कलाकार इंजीनियर
अनेक पदों है स्थान है अपनी पहचान।
अपनें सपनों को पंख देकर
त्याग तपस्या और समर्पण स्नेह के
सद्गुणों से जीवन को है महकाना।

करूं वंदन

श्री गणेश और मां सरस्वती को करूं वंदन।
नववर्ष का करूं स्वागत करूं अभिनंदन।

रोग शोक चिंता भय
सारी परेशानियों की हों बिदाई
आप सभी को नववर्ष की बहुत बहुत बधाई।
आने वाला वर्ष हो मंगलमय और सुखदाई।
जीवन में चाहे जितनी भी हो कठिनाई।
रुकना नहीं बढ़ना है आगे
जो छूना चाहते हो ऊंचाई।
नेक कर्मो में समय बीते
है अनमोल यह जीवन।

नई उम्मीद नई आश नया उत्साह
हो नई उमंग।
आओ मिलकर खुशियां बांट लें
सब सखियों के संग।
भावों और विचारों की उठती है
मन में तरंग।
कविता बनकर बहती हैं
सुंदर भावों का रंग।
सद्गुणों से भर लो मन
जीवन महके जैसे चंदन।

बचपन बीता जवानी बीती
बुढ़ापा आने को आतुर
धीरे धीरे उम्र जाएगा ढल।
यादें बनकर रह जाती है
बीता हुआ पल।
आज में जीना सिख ले प्यारे
मत सोच क्या होगा कल।
समय का सदुपयोग है जरूरी
जो होना चाहते हो जीवन में सफल।
स्थायी तो कुछ भी नहीं यहां
ना यौवन ना धन।

मंगलमय नववर्ष आया

मंगलमय नववर्ष आया ले मंद मंद मुस्कान।
कण कण में संगीत गूंजे मधुर सुरीली तान।

नये साल की नई सुबह की सुनो शंखनाद।
नव चेतना जगे हृदय में त्यागो आलस्य प्रमाद।
नशा मुक्त यह देश हो मेरा
हो नव युग का निर्माण।
शुभ संकल्पों के साथ हो दिन की शुरूवात।
मन की सारी मलीनता मिटाओ
भूलो पिछली सारी कड़वी बात।
अपनों का साथ मिले तो हर मुस्कील
हो आसान।
सूरज नयसंदेशा लेकर आया बीती
काली अंधियारी रात।
मोह निद्रा से जाग अब तो
हो गया नया नव प्रभात।
दया दृष्टी हो सभी पर
प्रभु करो सभी जीवों का कल्याण।
नीले आसमान में उड़ते पंछी गाते गीत।
कलियां भी मुस्कुरा रही हैं
है पवन अति शीतल और सुगंधित।
प्रकृति के समीप बैठकर हृदय होता हर्षित।
नित्य प्रभु का दर्शन कर मन मेरा आनंदित।
श्यामा श्याम के श्री चरणों मे मेरा ध्यान।

एक श्री भगवान और दूजे मौत को
रखना सदा ही याद।
यह मानव देह दिया हमको
प्रभु आपका कोटि कोटि धन्यवाद।
जपूं निरंतर नाम आपका
प्रभु करूं सदा गुणगान।

नये साल की नई सुबह

नये साल की नई सुबह।
और जागा जग ये सारा।
भागों में फूल खिले हैं सुंदर है नजारा।
नये साल की नई सुबह।
और भौंरे कर रहे गुंजार।
बांटो सबको सदा स्नेह का उपहार।
नये साल की नई सुबह।
और नया उत्साह नया जोश।
कभी मत देखो दूसरों में दुर्गुण दोष।
नये साल की नई सुबह।
और बहे ज्ञान की गंगा।
करो योग व्यायाम रहोगे स्वास्थ्य चंगा।
नये साल की नई सुबह।
और वृक्ष लगाकर प्रदूषण से है बचना।
सुंदर सृष्टि यह प्रभु की है सुंदर रचना।
नये साल की नई सुबह।
त्याग दो मांसाहार।
हृदय में दया हो सब जीवों के प्रती हो प्यार।
नये साल की नई सुबह।
और जड़ से मिट जाये आतंकवाद।
देशद्रोही कांपे थरथर हो ऐसा शंखनाद।
नये साल की नई सुबह।
और बड़े बुजुर्गों का करो सम्मान।
धन यौवन का कभी करना मत अभिमान।
नये साल की नई सुबह।
और बंद हो हिंसा चोरी बलात्कार।
बचपन से बच्चों में डाले अच्छे संस्कार।
नये साल की नई सुबह।
और है यह आव्हान।
कभी व्यर्थ ना जाय देशभक्तों का बलिदान।
नये साल की नई सुबह।
और फहरे धर्म की ध्वजा।
नये साल की नई सुबह।
और सुख समृद्धि हो चहुंओर।
सबके जीवन को महकाए यह सुहानी भोर।

श्रद्धा के पुष्प समर्पित कर

श्रद्धा के पुष्प समर्पित कर
करूं गुरू चरणों में प्रणाम।
ईश्वर से भी पहले हम
लेते हैं गुरू का नाम।

गुरु बिना नहीं मिलता है ज्ञान।
जिनकी महिमा सभी करते गान।
जीवन सफल बनाते
बनाते बिगड़े काम।

ईश्वर से भी ऊंचा है गुरु का स्थान।
जीवन का अंधकार मिटा कर
हर लेते अज्ञान।
गुरु चरणों में ही मिलता है
मन को विश्राम।

साधारण से हम बन पाते है महान।
हमारी छुपी प्रतिमा को निखरते
देते हमे नई पहचान।
माता पिता ,शिक्षा और दीक्षा देने वाले
सभी गुरुजनों का करें सदा सम्मान।
गुरु कृपा बीना तो मिलते नही भगवान।
जीवन का परम लक्ष्य हम पाते
इनके चरणों में चारो धाम।

मेरे मन को भाए सखी सावन की

मेरे मन को भाए सखी सावन की
रिमझिम रिमझिम फुहार।
उमड़ घुमड़ कर बरसे बदरा
गीत गाये मेघ मल्हार।

चमके बिजली बदल में
घटाएँ काली काली
मधुर मनोहर रूप प्रकृति का
चारों ओर छाई है हरियाली।
देख हृदय प्रफुल्लित होता मेरा
और होता मधुर भावों का संचार।

शूर्योदय का समय आसमान में
उड़ते पंछी चिड़ियों की चहक।
खुशबू फूलों की और मिट्टी की
सौंधी सौंधी महक।
पौंधो से लिपटी लताएं
रंग बिरंगी तितलियां और फूलों पर
मंडराते भौरों का गुंजार।

मां दंतेश्वरी की पावन धरती
जहां तीरथगढ़ का बहता झरना
और चित्रकोट की जलधारा।
कुटुम्मसर गुफा यहां का और
तातामारी का सुंदर नजारा।
ये है यहां की अनमोल धरोहर
प्रकृति का अनुपम उपहार।

मन में है नया उत्साह और उमंग
हंसी ठिठोली सखियों के संग
कजरी गाते मोद मानते
हरी साड़ी पहने झूला झूले
कर सुंदर श्रृंगार।

युगल जोड़ी श्यामा श्याम
गल बैहियां डालें
विराज रहे उपवन में।
ललिता विशाखा आदि सखियां
कदंब की डाल पर
झूला डाले है मधुवन में।
नीली साड़ी पीला पीताम्बर है
और नृत्य करता मोर।
हो रही हल्की हल्की बूंदा बांदी
ऐसा दृश्य मनोहर देख देख
मैं हो रही भाव विभोर।
मोहन बजाते मधुर मुरलिया
और झांझ मृदंग करताल बजाते
शाखियाँ छेड़े वीणा के तार।

खुशहाली लेकर है आया सावन

खुशहाली लेकर है आया सावन।
आज तीज का त्यौहार है पवन।
शंकर पार्वती की पूजा से
आनंदमय हो ये जीवन।
ऋतु है सुहानी और
संग पिया मनभावन।
प्रीत के रंग में रंगी चुनरिया
झूमे मोरा तन मन।
आँख में कजरा बालों में गजरा
माथे पर बिंदिया चमके
और हाथों में खनके चूड़ी कंगन।
लंबी हो उमर पिया की
रहुं सदा सुहागन।
मैया गौरी देना वरदान
रहे अटूट जन्मों जनम ये बंधन।

प्रगट भए प्रभु श्री कृष्ण

प्रगट भए प्रभु श्री कृष्ण।
आनंद छायो है नंद भवन में।
नंद यशोदा ;रोहिणी सुनंदा हर्षित है।
अति उमंग है ब्रजवासियों के मन में।
धरती माता गौ माता और
देवों की सुन पुकार।
निर्गुण निराकार ब्रह्म।
भक्तो के प्रेम वश धरे रूप।
सगुण साकार।
कृष्ण पक्ष की अष्टमी
अर्धरात्रि बुधवार।कारागृह में कंश के लिए प्रभु अवतार।

जीवन वृत्त

रेणुका पटेल

पिता का नाम– श्री धवीर मोहन पटेल
माता का नाम — श्रीमती भोज कुमारी पटेल
पति का नाम — श्री उमाशंकर पटेल
पुत्र का नाम — पुष्कर पटेल
जन्म स्थान — ग्राम बीरकोल
जिला — महासमुंद
ससुराल —ग्राम हरदी
पोस्ट— घोंच
जिला – महासमुंद
जन्म तिथि — ५ -३-१९७७
शिक्षा —बी . ए. शास्त्रीय संगीत में वीशारद
व्यवसाय — गृहणी

साहित्यिक उपलब्धियां एवं प्रकाशन

अभिरुचि
कविता लिखना , नृत्य गायन और आध्यात्मिक किताबों को पढ़ना

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैंगलुरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

❖ कवितायें

रेणुका पटेल

संसार को मुक्ति प्रदान करने वाले प्रभु।
देखो कैसे बांध गए ममता के बंधन में।
गोपी गोप सब मिलकर नाचे।
गावे मंगल गीत।
शिव ब्रह्मा नारद और संतो का
हृदय है पुलकित।
अति मनोहर श्याम सुंदर सलोने है।
कमलन ते कोमल है चरण।
हाथी घोड़ा उपहार लुटावे नंद बाबा।
और मुंहमगा देवे अन्न धन।
नाचे अप्सरा गंधर्व गावे ।
और देवता पुष्प बरसाये गगन में।
बह रही है करती कल कल।
यमुना का निर्मल जल।
रंग बिरंगे फूल खिले है।
और पेड़ो में लदे हुए हैं बीन मौसम के फल।
कमल पर मंडरा रहे हैं भौंरे पीने को मकरंद।
चौकड़ी भरती गयौ और हिरणों का झुंड।
आज चारो ओर छाया है आनंद ही आनंद।
जाने क्या जादू छाया है।
सुंदर सुगंधित शीतल मंद पवन में।

आज विराजेंगे मर्यादा पुरुषोत्तम

आज विराजेंगे मर्यादा पुरुषोत्तम
हमारे प्रभु श्री राम।
जयकारा गूंजे चारो दिशाओं में
गूंजे प्रभु का नाम।
आज घर आंगन , गांव गली,शहर नगर,
और मंदिरों को सजायेंगे।
मंगल गीत गायेंगे और दीप जगमगाएंगे।
बरसों बाद आई है ये भक्तिमय सिंदूरी शाम।
यह नववर्ष आया है लेकर
नया उत्साह और नई उमंग।
गूंजे शंखनाद, बाजे डोल नगाड़े,
झांझ मंजीरे और बाजे मृदंग।
लाखो राम भक्त कर रहे
घर घर पीला अक्षत(न्यौता)
पहुंचने का नेक काम।
धर्म भूमि है भारत और हम
ऋषियों की संतान।
अपनी सनातन संस्कृति का
हृदय से करते हैं सम्मान।
धर्म ध्वजा लहरायेंगे
बढ़ाएंगे देश की शान।
सार्थक हुआ है आज
लाखों भक्तो का बलिदान।
संतो की साधना,योगी जी मोदी जी
और उनके सहयोगियों के अथक परिश्रम
और देश प्रेम का है सुंदर परिणाम।
आज अवध में है विशाल
और भव्य आयोजन।
भक्तो का हृदय है पुलकित
और प्रफुल्लित है मन।
झूमे नाचे गीत गाये
होकर प्रेम मगन।
दुल्हन की तरह सजा है
देखो आज अयोध्या धाम।
शरद कालीन सूर्योदय की सुंदर बेला
और नदी का किनारा।
चारो ओर ऊंचे ऊंचे पर्वत श्रृंखला है
और सुंदर नजारा।

अठखेलियां करती जल तरंग
और हवा भी है चंचल।
कलकल करती बह रही नदी
जल है स्वच्छ और निर्मल।
प्रकृति का परिवर्तन समझो
करती है क्या इशारा।

मंद शीतल हवा के संग झूम रही है लतायें
और वृक्षों की डाली।
वंशी वादन करते तुम आ जाओ वनमली।
है अनंत जन्मों का तुम संग नाता हमारा।

किनारे कछार में लगी गेंदा सेवंती
और सरसों लगे सुंदर।
हे कृष्ण ऐसी कृपा करो प्रकृति के
कण कण में देखूं तुम्हारी छवि मनोहर।
प्रकृति के समीप प्रफुल्लित होता हृदय मेरा
प्रभु बहुत ही सुन्दर है सृष्टी तुम्हारा।

गर्म पानी चाय काफी सूप से होती है
सुबह की शुरूवात।
थोड़ी जागी थोड़ी सोई श्याम प्रभु के
सपनों में खोई मीठी लगे रात।
नीले आसमान से ओझल होने लगे
चांद और तारा।

निकाल लिया हमने साल स्वेटर
और कंबल रजाई।
सुबह की गुनगुनी सुनहरी धूप
लगती है सुखदायी।
ठंडी का ये मौसम मुझको
लगता है बड़ा प्यारा।

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति दान धर्म का पर्व है पावन।
तीर्थों और मंदिरों में जाकर करते पूजन।

खुशी मनाते पतंग उड़कर।
तिल गुड़ का लड्डू
और खिचड़ी बनता है घर घर।
मकर राशि में प्रवेश जब सूर्य का होता है
तो होता है उत्तरायण।
नीले आसमान में रंग बिरंगी उड़ती पतंग।
लहराती बलखाती इठलाती हवा के संग।
बच्चों के चेहरों में चमक
और लाती हैं खुशियों की तरंग।
हमारी विभिन्न परंपराओं का
खूबसूरत और प्यारा है रंग।
गुड़ के जैसा मीठा
और बोलो सत्य मधुर वचन।

फसल कट गए अब जाने वाला है शीत।
हर मौसम का है अपना आनंद
पर्व सिखाते हमको
मिलजुलकर रहने की रीत।
कभी ऊपर तो कभी नीचे
पतंग तरह है यह जीवन।

शिवालय

शांति और आनंद का स्रोत है शिवालय।
जहां बैठ मुझे मिलती है परम शांति
मिट जाता है रोग शोक चिंता भय।

देव दनुज सब जिनकी करते आराधना।
परम पद पाते हैं जो करते शिव की साधना।
हम क्रोध लोभ मोह पर पा जाते हैं विजय।

कर्मो के बंधन से जीव को मुक्ति करते हैं प्रदान।
बाबा की कृपा से हो जाता है आत्मज्ञान।
शिव की शरण आता जीव जब होता है
भाग्योदय।

मृत्युंजय मंत्र जाप से मृत्यु जाता है टल।
जिनकी भक्ति से जीवन बन जाता सफल।
कर मन भोले की भक्ति का दृढ़ निश्चय।

जीवन की हर समस्या का मिलता है हल।
शिव शिव रट मन अब प्रति पल।
कण कण में शिव समाये जग हो शिवमय।

खुद को सुधार लो

हो जाएगा समाज का सुधार।
किसी प्रकार का कोई नशा मत करो
यदि चाहते हो सुखी परिवार।

सभी जीवो को है जीने का अधिकार
किसी निरीह मूक पशु को मारना क्रूरता है
निर्दयता है इसलिए छोड़ो मांसाहार।

देख सुनकर दिल दहल जाता है
चोरी हिंसा बलात्कार की खबरों से
भरा अखबार।
आए दिन होती रहती हाहाकार।
आम जनता का भी कोई कर्तव्य है या नहीं
क्या सिर्फ इन सब बातों के लिए
सरकार ही है जिम्मेदार।

नारी ही नारी की दुश्मन
क्यों होती है आपस में तकरार।
कभी सास बहू पर तो कभी बहू सास पर
क्यों करती हैं अत्याचार।
वह घर स्वर्ग बन जाता है
जहां की स्त्रियां होती है समझदार।

अपनी संस्कृति अपने सनातन धर्म
रीति रिवाज परंपराओं का हृदय से
सम्मान करना है
लेकिन कुरीतियों का हो बहिष्कार।
अच्छे विचारों के बीच बोना है
यदि चाहिए एक स्वस्थ समाज
और सुंदर संसार।

कभी मुश्किल - तो कभी आसान

जिंदगी लगती है कभी मुश्किल
तो कभी आसान।
कभी निंदा तिरस्कार अपमान मिला
तो कभी मिला स्नेह और सम्मान।

मेरा है अस्तित्व आज है मेरी पहचान।
कोमल कल्पनाओं और
कविताओं की मेरी उड़ान।

दुखियों के प्रति दिल में दया हो
और अपने बड़े बुजुर्गों का हो सम्मान।
प्रसिद्ध पाकर मन में
आए ना कभी अभिमान।

आते जाते रहेंगे जीवन में
दुखों का तूफान।
घर की जिम्मेदारियां के साथ
छोटी-छोटी खुशियों का
और स्वयं का भी रखना है ध्यान।

अपनी प्रशंसा के शब्दों को सुनकर
मैं भूल जाती हूं अपनी थकान।
खुशी से खिल जाती हूं
और होठों पर मीठी सी मुस्कान।

सुख हो या दुख हो अपना
धीरज नहीं खोना है
नहीं खोना है अपना आत्मसम्मान
कुछ पूरे हुए और दिल में
कुछ अधूरे है अरमान।

❖ लघुकथायें

रेणुका पटेल
कवयित्री

जैसी करनी वैसी भरनी।

एक गांव में एक जमींदार रहता था ।

उसकी पत्नी का नाम मालती और जमींदार का नाम रघुनाथ था उसके दो बेटे थे छोटे बेटे का नाम मदन और बड़े बेटे का नाम मोहन था मदन की पत्नी का नाम था सुशीला और मोहन की पत्नी का नाम था सरला बहुत ही सुशील समझदार और संस्कारी थी सास ससुर की खूब सेवा करती

सरला के चार बच्चे थे लेकिन सरला की सास सुशीला को ज्यादा प्यार करती क्योंकि दहेज में ज्यादा पैसा जो लेकर आई थी घर का सारा काम सरला को ही कराती थी खाना भी ढंग का नहीं देती थी।

चार साल हो गए सुशील के कोई संतान नहीं हुआ। दो साल बाद दोनों भाई का बटवारा हो गया बंटवारे में मोहन को जमीन मकान और गृहस्थी के सामान के नाम पर दो चार बर्तन गुदड़ी और थोड़ा बहुत कुछ समान ही दिए घर का सारा सामान इधर उधर किसी दूसरों के घर छुपा दिए सरला और मोहन दोनों बहुत मेहनती थे अपनी मेहनत से धीरे धीरे घर का सामान जुटाने और बच्चों को पढ़ाने लिखने में लग गए

एक दिन खेत में दोनों भाई मदन और मोहन का किसी बात को लेकर विवाद हुआ और मदन ने मोहन ऊपर पत्थर से मारने का झूठा आरोप लगा कर केश कर दिया मोहन को विश्वास नहीं हो रहा था उसके आंखों में आंसू आ गया लेकिन केश साबित नहीं होने उसको रिहा कर दिए बात आई गई हो गई

बहुत साल हो गए उसके कोई संतान नहीं हुआ तो उसने लोगों के कहने पर दूसरा ब्याह कर लिया सुशील नहीं चाहती थी लेकिन मदन माना नहीं और ब्याह कर लिया दूसरी पत्नी का नाम सुकांती था

कुछ दिन बाद ही सुशील और सुकांती दोनों में झगड़े चालू हो गए आए दिन दोनों में किसी न किसी बात को लेकर कलह होता घर का माहौल नरक जैसा हो गया उसी बीच सुकांती ने बेटे को जन्म दिया लेकिन दोनों के बीच विवाद बढ़ने लगा तो मदन ने सुशीला को उसके मायके में छोड़ दिया बच्चा अब बड़ा हो गया था खूब लाड प्यार के कारण काफी उदंड हो गया था अपनी हर जिद पूरी करवाता था

सुशीला मायके में ही थी वो भी खर्च के लिए जमीन बटवारा चाहती थी लेकिन सुलाती उसकी एक पैसा देना नहीं चाहती थी तो सुशीला ने परेशान होकर अपने पति के ऊपर केश कर दिया।

एक दिन सुकांती का बेटा सोनू अपने पिता मदन से कोई चीज लेने की जिद्द कर रहा था लेकिन पिता के मना करने पर उसके सिर पर पत्थर दे मारा जिससे मदन के माथे से खून बहने लगा तो वह डर कर घर से कहीं भाग गया बहुत ढूंढने का प्रयास किए लेकिन मिला नहीं इधर सुशीला के केश करने के कारण मदन को पुलिस जेल ले गई ल गभग एक महीने तक जेल में रहा

उसी बीच जब सोनू को पता चला तो घर वापस आ गया और अपनी सौतेली म सुशीला के साथ समझौता कर बड़ी मुश्किल से अपने पिता को जेल से छुड़ा कर लाया ।

इसलिए कहते है जैसी करनी वैसी भरनी

कभी किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाना चाहिए कर्म का फल अवश्य भुगतना पड़ता है।

वसुधैव कुटुंबकम्

मेरे पूज्य पिताजी (जो अब इस दुनिया में नहीं हैं) गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

किसान थे खेती बड़ी का कम करते थे

मेरी मां एक कुशल गृहणी है (जो अब काफी वृद्ध हो चुकी हैं) और नीति नियम से चलने वाली धर्म कर्म में रुचि रखने वाली

एक धार्मिक महिला हैं। जो पशु पक्षी से से लेकर कीड़े मकोड़े सांप बिच्छू किसी जीव को किसी प्रकार हानि ना पहुंचे इसका सदा ध्यान रखती ।

घर में सांप बिच्छू निकलता तो उसे मरने नहीं देती उसे सावधानी पूर्वक बाहर निकाल दिया जाता था।

पहले साधु लोग गांव में आते थे गांव के बाहर शिवाल य या तलब के किनारे रहते और घर घर भिक्षा के लि ए जाते थे ।

उस दिन मां का तबियत थोड़ा ठीक नहीं था

हम भाई बहन स्कूल चले जाते दोपहर में खाना खाने आते थे। मुझे लगा मां आज आराम कर रही होगी ल `किन खाना खाने आई तो देखा मां भोजन बना रही थी और बाहर वाले आंगन में तीन साधु बैठे थे

मां ने बताया की आराम करने जाने ही वाली थी की साधु लोग आ गये।

दो घरों में मांग चुके थे और हमारा घर तीसरा है।

साधुओं का नियम था तीसरे घर से भोजन प्राप्त नहीं तो वो उस उपवास ही रहते है और किसी मांगने नहीं जाते मा ने बताया।

अस्वस्थ होने पर भी बड़ी श्रद्धा पूर्वक सात्विक भोजन बना कर साधुओं को भोजन कराया। शरीर से थोड़ी अस्वस्थ थी मगर उनके चेहरे पर आत्म संतुष्टि थी साधुओं को निराश नहीं होना पड़ा।

यही है वसुधैव कुटुंबकम् की भावना।